अनुष्टुप् छन्द

संस्कृत काव्यजगत् में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में अनुष्टुप् छन्द अग्रगण्य है। रामायण, महाभारत, पुराणादि तथा अनेक स्तोत्रों में अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग बहुलता से हुआ है। वेदों में भी इसका प्रयोग प्राप्त होता है।

अनुष्टुप् छन्द की प्रकृति-

वर्ण गणना के आधार पर रचा हुआ होने के कारण अनुष्टुप् वार्णिक छन्द है।

अनुष्टुप् छन्द का लक्षण-

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।

द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण का छठा वर्ण गुरु होता है और पंचमाक्षर लघु होता है एवं प्रथम और तृतीय पाद का सातवाँ वर्ण गुरु होता है तथा दूसरे और चौथे पाद का सप्तमाक्षर लघु होता है, उसे अनुष्टुप् छन्द कहते हैं।

अनुष्टुप् छन्द का उदाहरण-

तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।

एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा।।

स्पष्टीकरण-

क) अनुष्टुप् छन्द में कुल ३२ वर्ण होते हैं। अनुष्टुप् छन्द में चार पाद होते हैं। प्रत्येक पाद में आठ वर्ण होते हैं।

ख) प्रत्येक आठवें वर्ण के बाद यति होती है।

विशेष-

क) यतः लौकिक संस्कृत का आदि श्लोक अनुष्टुप् छन्द में रचा गया, अतः इस छन्द की श्लोक संज्ञा भी है।

Dhananjay Vasudev Dwivedi